ये बात है 26 जनवरी, 2001 की। नीमच रेलवे स्टेशन पर नेहा काला चश्मा लगाये, कंधे पर पर्स लटकाये, चित्तौड़गढ़ से इंदौर जाने वाली गाड़ी का इंतज़ार कर रही थी। स्टेशन पर स्टेशन प्रबंधक प्रभुन सिंह, बंद गले का गहरा नीला कोट पैंट पहने, साफा बांधे, झण्डारोहण कर रहे थे। बाकायदा, झण्डा फहराया गया, राष्ट्रगीत बजाया गया, आर.पी.एफ. के जवानों द्वारा झण्डे को सलामी दी गयी। फिर महाप्रबंधक का संदेश पढ़कर सुनाया गया। बच्चों को मिठाई बाँटी गयी। स्टेशन पर देश-भक्ति का माहौल था।

''सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा'' ये गीत बज रहा था। आज स्टेशन पर चाय-चाये-चाये की आवाज़ें नहीं आ रही थीं। साफ-सफाई भी खास की गयी थी। सवारियाँ अपने सामान के साथ गाड़ी का इंतज़ार कर रही थीं। सीटी बजाते हुए धड़धड़ाती गाड़ी ने जैसे ही स्टेशन पर प्रवेश किया, एकदम भगदड़ ही मच गई। चाये-चाये-चाये की आवाज़े आने लगीं। इसी गाड़ी के एक जनरल डिब्बे में दिनेश जी अपनी पत्नी आरती के साथ बैठे हुए थे। आरती को अपने भाई चीकू की शादी की चिंता हमेशा सताये रहती थी। 28 साल का हो गया है, नौकरी भी लग गई है, न जाने कब करेगा शादी? आरती हमेशा कहती रहती - ''कोई लड़की पसंद ही नहीं आती''। दिनेश जी चुपचाप सुनते रहते। तीन साल हो गये मुझे लड़की देखते-देखते, तुम कुछ करते क्यों नहीं ? आरती बोली। दिनेश जी ने सर हिला दिया। इधर नेहा ने इसी डिब्बे में प्रवेश किया। भीड़ के मारे बमुश्किल तमाम एक कंधे पर पर्स, एक पर बैग लटकाये, काला चश्मा लगाये नेहा जैसे-तैसे डिब्बे में घुसकर दरवाज़े पर खड़ी हो गई थी। सवारियों से ठसाठस डिब्बे। आगे जाने की जगह ही नहीं। बेचारी क्या करे? खूबसूरती गज़ब की। सादगी बेपनाह। सभी की नज़र उसी पर थी। नेहा को देखते ही दिनेश जी ने आरती से कहा- 'यही है वो लड़की जिससे चीकू की शादी होगी' 'हटो, तुम्हें हमेशा मजाक सूझती है'-आरती बोली। देख लेना, दिनेश जी ने कहा और उठकर जैसे-तैसे नेहा को बुला कर अपने पास बिठा लिया। नेहा ने कहा 'शुक्रिया'। क्या नाम है तुम्हारा? दिनेश जी ने पूछा। नेहा-उसने चश्मा उतारते हुए कहा। नेहा के चश्मा उतारते ही तो ऐसा लगा जैसे कोच की बत्तियाँ जल गई हैं। कोच में सवारियों की काँव-काँव में किसी को पता नहीं चला कि दिनेश और आरती ने नेहा से कितनी पूछ-ताछ कर डाली। गाड़ी नीमच से चलकर रतलाम पहुँच चुकी थी। स्टेशन पर रतलामी सेव और पोहे की धड़ाधड़ बिक्री हो रही थी। स्टेशन से पूड़ी-सब्ज़ी लेकर खाने का मज़ा ही कुछ और है। इधर तो दिनेश और आरती नेहा से चीकू की शादी की बात पक्की करने में लगे हुए थे, उधर एक और करिश्माई नज़ारा देखने में आया। मन्दसौर से कुन्नी बाई अपने देवर के साथ बड़नगर जा रही थी। बड़नगर में उसका मायका है, जहाँ जापे की तैयारी में जा रही थी। लेकिन ये क्या हुआ गाड़ी में ही कुन्नी को प्रसव हो गया। आसपास के यात्रियों ने चादर-बादर लगाकर ओट की और कुन्नी ने एक कन्या को जन्म दिया।

रेल की यात्रा की क्या मिसाल दें? कहीं तो ये दो दिलों का मेल कराती है जो सारी ज़िंदगी के लिए जीवन साथी बन जाते हैं। कहीं एक बच्ची का जन्म ही ट्रेन में हो जाता है। बच्ची का जन्म स्थान ट्रेन। लोगों ने कुन्नी को उसकी नवजात कन्या के साथ स्टेशन पर ही उतरवा दिया। दिनेश जी ने ठेले से लेकर कुछ फल कुन्नी को दिये। इतने में गाड़ी रतलाम स्टेशन से रवाना हो गई। रात हो चली है। गाड़ी की आधी बत्तियाँ जल रही हैं आधी नहीं। पंखे भी सब चालू नहीं हैं। जनरल डिब्बे की यही हालत रहती है। लोग अपना खाना निकाल कर खाने लगे हैं। खाने के लिये कोई किसी से पूछता नहीं है क्यों कि रेलगाड़ी में किसी दूसरे का कोई खाता नहीं है। पहले-लोग खाने के लिए एक-दूसरे को पूछते थे, पर इन दिनों जब से कुछ नशे की चीज़ खिला कर गाड़ियों में लूट-पाट होने लगी है, लोगों ने एक-दूसरे का खाना बंद कर दिया है। दिनेश और आरती की नेहा से अब तक काफी घनिष्ठता बढ़ चुकी थी। तीनों साथ मिल कर खाना खा रहे थे। भरवाँ बैंगन की सब्ज़ी दिनेश जी ने खुद बनायी थी। आरती ने बनाई थी आलू की सूखी सब्ज़ी, नारियल की दही वाली चटनी, पूरी-कचौड़ी, साथ में हरी मिर्च दिनेश जी को खाने के साथ हरी मिर्च ज़रूर चाहिये। नेहा से खाने की तारीफ किये बिना न रहा गया।''मैंने कितनी बार ट्रेन से यात्रा की, किन्तु आज की यात्रा मेरे लिये अजीबन यादगार रहेगी।'' नेहा बोली-''आज जैसा खाना तो मैंने गाड़ी में कभी नहीं खाया।'' आरती से रहा नहीं गया। बोली- ''हम तो हमेशा गाड़ी में खाने-पीने का भरपूर सामान लेकर चलते हैं। गाड़ी में जाना यानि भरपूर खाना। दिनेश जी बोले-''आज तो हमारे साथ बच्चे नहीं है। बच्चे होते तो खाने का दौर रुकता ही नहीं।'' इन लोगों की बातचीत में ही गाने की आवाज़ आने लगी 'गरीबों की सुनो, वो तुम्हारी सुनेगा। तुम एक पैसा दोगे वो दस लाख देगा।''-एक अंधा भिखारी ढपली बजा कर गा-गाकर भीख मांग रहा था। एक बच्चा उंगली पकड़े उसके साथ चल रहा था। किसी ने रुपया दिया, किसी ने दो रुपया। ऐसे ही ये भिखारी अपने गन्तव्य तक पहुँच जायेगा। टिकट भी नहीं लगा और 100-50 रुपया कमाई भी हो गयी। ये है रेल की यात्रा। रेल दिन-रात चलती जाती है। नदी-नालों, खेतों, खलिहानों, पर्वतों, टीलों, गाँव-गाँव को पार करते हुए चलती ही जाती है। लोग नींद भी निकाल लेते हैं। रेल की भाषा मेल की भाषा है। सिंध को पंजाब से, कर्नाटक को केरल से, आसाम को बंगाल से, जम्मू को कश्मीर से, कन्या कुमारी को नैनीताल से, इन्दौर को भोपाल से मिलाती है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, सभी तो भाई-भाई की तरह यात्रा करते हैं। इसमें सब अपनी-अपनी बोली बोलते, अपना-अपना खाना खाते, इसमें साथ-साथ यात्रा करते हैं। क्या बात है? चलो रेल का सफ़र तो हुआ तय अब फिर कभी मिलेंगे।

✍एस. के. मिश्रा,
प्रोफेसर (यातायात प्रबंधन),रेलवे स्टाफ कॉलेज, वडोदरा

सूडोकू

कैसे खेलें:-

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है।
- आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3X3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।
- पहेली का केवल एक ही हल है।

					1	2		
		9	8					
8					6		7	
7		5		3			6	
			2		9			
	2			1		8		3
	3		7					4
					4	5		
		6	5					

1		2			3		4	
								9
	5		6		7		8	
					8			
7		8		9		1		2
			7					
		3			5		4	
8			4					
		7		8		9		1